



Date - 28 Feb 2022

- वर्ष 2022 में महर्षि दयानंद सरस्वती 26 फरवरी को मनाई जा रही है।
- पारंपरिक हिंदू कैलेंडर के अनुसार, दयानंद सरस्वती का जन्म फाल्गुन महीने में कृष्ण पक्ष की दशमी को हुआ था।

महर्षि दयानंद सरस्वती:

- स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 12 फरवरी, 1824 को गुजरात के टंकारा में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके माता-पिता यशोदा बाई और लालजी तिवारी रूढ़िवादी ब्राह्मण थे।
- पहले उनका नाम मूल शंकर तिवारी रखा गया था क्योंकि उनका जन्म मूल नक्षत्र के दौरान हुआ था।
- सत्य की खोज में वे पन्द्रह वर्षों (1845-60) तक तपस्वी के रूप में भटकते रहे।
- दयानन्द के विचार उनकी प्रसिद्ध कृति सत्यार्थ प्रकाश में प्रकाशित हुए।

समाज के लिए योगदान:

- वे एक भारतीय दार्शनिक, सामाजिक नेता और आर्य समाज के संस्थापक थे।
- आर्य समाज वैदिक धर्म का एक सुधार आंदोलन है और उन्होंने वर्ष 1876 में "भारतीयों के लिए भारत" के रूप में स्वराज का आह्वान करने वाले पहले व्यक्ति थे।
- वे एक आत्म-प्रबुद्ध व्यक्ति और भारत के महान नेता थे जिन्होंने भारतीय समाज पर एक बहुत बड़ा प्रभाव छोड़ा।
- आर्य समाज की पहली इकाई औपचारिक रूप से उनके द्वारा 1875 में मुंबई (तब बॉम्बे) में स्थापित की गई थी और बाद में इसका मुख्यालय लाहौर में स्थापित किया गया था।
- अखंड भारत की उनकी दृष्टि में एक वर्गहीन और जातिविहीन समाज (धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर पर) और विदेशी शासन से मुक्त भारत शामिल था, जिसमें आर्य धर्म सभी का सामान्य धर्म था।
- उन्होंने वेदों से प्रेरणा ली और उन्हें 'भारत के युग की चट्टान', 'हिंदू धर्म का अचूक और सच्चा मूल बीज' माना। उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" का नारा दिया।
- उन्होंने चतुर्वर्ण व्यवस्था की वैदिक अवधारणा की शुरुआत की जिसमें एक व्यक्ति किसी भी जाति में पैदा नहीं हुआ था, लेकिन उसके द्वारा पालन किए जाने वाले व्यवसाय के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के रूप में पहचाना गया था।

शिक्षा प्रणाली में योगदान:

- उन्होंने शिक्षा प्रणाली में एक पूर्ण परिवर्तन की शुरुआत की और उन्हें आधुनिक भारत के दूरदर्शी लोगों में से एक माना जाता है।
- स्वामी दयानंद सरस्वती के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए डीएवी (दयानंद एंग्लो वैदिक) स्कूल वर्ष 1886 में अस्तित्व में आया।
- पहला डीएवी स्कूल लाहौर में स्थापित किया गया था और महात्मा हंसराज इसके प्रधानाध्यापक थे।

आर्य समाज के बारे में:

- आर्य समाज का उद्देश्य वेदों (सबसे पुराना हिंदू ग्रंथ) को सत्य के रूप में फिर से स्थापित करना है। उन्होंने वेदों में बाद के परिवर्धन को खारिज कर दिया और अपनी व्याख्या में अन्य वैदिक विचारों को शामिल किया।
- 1920 और 1930 के दशक की शुरुआत में कई मुद्दों पर तनाव बढ़ गया। मुसलमान "मस्जिद के सामने संगीत", गोरक्षा आंदोलन और आर्य समाज के शुद्धिकरण आंदोलन से नाराज़ थे।
- आर्य समाज का प्रभाव पश्चिमी और उत्तरी भारत में अधिक रहा है।
- आर्य समाज मूर्ति पूजा, पशु बलि, श्राद्ध (पैतृक कर्मकांड), जन्म के आधार पर जाति और योग्यता नहीं, अस्पृश्यता, बाल विवाह, तीर्थयात्रा, पुरोहिती और मंदिर प्रसाद की पूजा का विरोध करता है।
- यह वेदों की अचूकता, कर्म सिद्धांत (पिछले कर्मों के संचित प्रभाव) और संसार (मृत्यु और पुनर्जन्म की प्रक्रिया), गाय की शुद्धता, संस्कारों (व्यक्तिगत संस्कार) के महत्व की प्रभावशीलता को कायम रखता है और अग्नि और सामाजिक सुधार के कार्यक्रमों के लिए वैदिक बलिदानों की प्रभावशीलता की पुष्टि करता है।
- आर्य समाज द्वारा महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ-साथ अंतर्जातीय विवाह को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य किया गया। विधवाओं के लिए मिशन, अनाथालयों और घरों का निर्माण, स्कूलों और कॉलेजों का एक नेटवर्क स्थापित किया गया, और अकाल राहत और चिकित्सा कार्य किए गए।

‘क्वांटम कुंजी वितरण’ (OKD): डीआरडीओ और आईआईटी दिल्ली

- हाल ही में, रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली के वैज्ञानिकों की एक संयुक्त टीम ने पहली बार 100 किलोमीटर से अधिक की दूरी के बीच ‘क्वांटम की डिस्ट्रीब्यूशन’ (क्यूकेडी) लिंक को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

महत्व:

- इस सफलता के साथ, देश ने ‘सैन्य-ग्रेड संचार सुरक्षा कुंजी पदानुक्रम’ के बूटस्ट्रैपिंग के लिए ‘सिक्वोर की ट्रांसफर’ के लिए स्वदेशी तकनीक का प्रदर्शन किया है।

- यह तकनीक सुरक्षा एजेंसियों को स्वदेशी प्रौद्योगिकी आधार के साथ एक उपयुक्त 'क्वांटम संचार नेटवर्क' की योजना बनाने में सक्षम बनाएगी।

‘क्वांटम कुंजी वितरण’ क्या है?

- क्वांटम कुंजी वितरण (क्यूकेडी) क्वांटम यांत्रिकी के विभिन्न घटकों का उपयोग करके 'सुरक्षित संचार' प्रदान करता है।
- यह तकनीक दो पक्षों को एक 'साझा रैंडम गुप्त कुंजी' उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है जो केवल उन्हें ज्ञात है, जिसका उपयोग संदेशों को एन्क्रिप्ट और डिक्लिप्ट करने के लिए किया जाता है। इस तरह दोनों पक्ष एक दूसरे के साथ बहुत सुरक्षित तरीके से संवाद कर सकते हैं।

कार्यप्रणाली:

- क्वांटम कुंजी वितरण (क्यूकेडी), एक फाइबर ऑप्टिक केबल पर लाखों ध्रुवीकृत प्रकाश कणों (फोटॉन) को एक इकाई से दूसरी इकाई में संचारित करके काम करता है।
- प्रत्येक फोटॉन में एक 'रैंडम क्वांटम स्टेट' होता है, और सामूहिक रूप से सभी फोटॉन 'यूनिट और जीरो' की 'बिट स्ट्रीम' बनाते हैं।
- जब एक फोटॉन 'बीम स्प्लिटर' के माध्यम से अपने रिसीवर के पास जाता है, तो यह 'बीम स्प्लिटर' फोटॉन को 'फोटॉन कलेक्टर' में एक यादृच्छिक पथ लेने के लिए मजबूर करता है।
- प्राप्तकर्ता तब मूल प्रेषक को भेजे गए फोटॉन के अनुक्रम से संबंधित डेटा के साथ प्रतिक्रिया करता है, और फिर प्रेषक इस प्रतिक्रिया की तुलना प्रत्येक फोटॉन द्वारा भेजे गए 'एमिटर' से करता है।
- गलत 'बीम संग्राहक' में फोटॉन अलग हो जाते हैं, जिससे केवल 'बिट्स' का एक विशिष्ट क्रम रह जाता है। इस बिट अनुक्रम को तब 'डेटा एन्क्रिप्ट' करने के लिए एक कुंजी के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

QKD की अभेद्यता का कारण:

- 'क्वांटम कुंजी वितरण' की सुरक्षा को क्यूकेडी ट्रांसमिशन के दौरान किसी भी अनधिकृत पहुंच का पता लगाने की क्षमता से बढ़ाया जाता है। फोटॉन के अद्वितीय और कमजोर करने वाले गुणों के कारण, जब कोई तीसरा पक्ष (या छिपकर बात करने वाला) किसी भी तरह से फोटॉन को पढ़ने या काँपी करने की कोशिश करता है, तो फोटॉन की स्थिति बदल जाती है।
- संचार के अंत में प्रेषक और रिसीवर द्वारा फोटॉन स्थिति में परिवर्तन का पता लगाया जाता है, और कुंजी के साथ छेड़छाड़ और त्यागने के लिए सतर्क किया जाता है।
- फिर, एक नई कुंजी प्रेषित की जाती है। इसके अलावा, चूंकि नव निर्मित कुंजियाँ वास्तव में यादृच्छिक हैं, वे भविष्य में हैकिंग के प्रयासों से सुरक्षित हैं।

क्वांटम कुंजी वितरण (क्यूकेडी) आवश्यकता:

- क्यूकेडी वर्तमान संचार नेटवर्क के माध्यम से विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों द्वारा परिवहन किए जा रहे डेटा की सुरक्षा के लिए 'क्वांटम कंप्यूटिंग' में तेजी से प्रगति से उत्पन्न खतरे को दूर करने के लिए आवश्यक है।
- क्यूकेडी सुरक्षा एजेंसियों को स्वदेशी प्रौद्योगिकी आधार के साथ एक उपयुक्त क्वांटम संचार नेटवर्क की योजना बनाने में सक्षम बनाएगा।

उचित और लाभकारी मूल्य (FRP)

- हाल ही में, महाराष्ट्र सरकार द्वारा एक सरकारी प्रस्ताव जारी किया गया है, जिसके अनुसार चीनी मिलें दो चरणों में मूल 'उचित और लाभकारी मूल्य' (FRP) का भुगतान कर सकेंगी।
- चीनी मिल मालिकों ने सरकार के इस कदम का स्वागत किया है। हालांकि इससे किसान खुश नहीं हैं।

एफआरपी क्या है?

- 'उचित और लाभकारी मूल्य' (FRP) सरकार द्वारा घोषित 'कीमत' है। चीनी मिलें इस 'कीमत' पर किसानों से खरीदे गए 'गन्ने' का भुगतान करने के लिए कानूनी रूप से बाध्य हैं।
- देश भर में एफआरपी का भुगतान 'गन्ना नियंत्रण आदेश, 1966' द्वारा नियंत्रित होता है। इस आदेश के अनुसार गन्ना वितरण की तिथि से 14 दिनों के भीतर भुगतान करना अनिवार्य है।

एफआरपी का निर्धारण:

- 'उचित और लाभकारी मूल्य' (FRP) गन्ने से चीनी की वसूली पर आधारित है। चीनी सीजन 2021-22 के लिए 'उचित और लाभकारी मूल्य' 10 फीसदी की बेस रिकवरी के आधार पर 2,900 रुपये प्रति टन तय किया गया है।
- चीनी की रिकवरी 'कुचल गन्ना' और 'उत्पादित चीनी' के बीच का अनुपात है, जिसे प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है।
- रिकवरी जितनी अधिक होगी, एफआरपी उतनी ही अधिक होगी और चीनी का उत्पादन भी अधिक होगा।

एफआरपी की घोषणा:

- केंद्र सरकार द्वारा 'उचित और लाभकारी मूल्य' की घोषणा की जाती है। यह 'आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति' (सीसीईए) द्वारा 'कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी)' की सिफारिशों के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
- सीसीईए की अध्यक्षता भारत के प्रधानमंत्री करते हैं।
- 'उचित और लाभकारी मूल्य' (एफआरपी) 'गन्ना उद्योग के पुनर्गठन' पर रंगराजन समिति की रिपोर्ट पर आधारित है।

एफआरपी का महत्व:

- गन्ना किसानों के बीच गन्ने की फसल को लोकप्रिय बनाने का एक प्रमुख कारण सुनिश्चित भुगतान है।

- गन्ना किसानों को भुगतान में देरी पर 15 प्रतिशत प्रतिवर्ष तक का ब्याज लग सकता है, और चीनी आयुक्त मिलों की संपत्तियों को संलग्न करके राजस्व संग्रह में बकाया के रूप में एफआरपी का भुगतान नहीं कर सकते हैं।

महाराष्ट्र में किसानों के विरोध के कारण:

- किसानों का तर्क है कि सरकार द्वारा प्रस्तावित इस तरीके से उनकी आय पर असर पड़ेगा, उनका कहना है कि एफआरपी का भुगतान किशतों में किया जाएगा और अज्ञात चर पर निर्भर करेगा, उन्हें हमेशा की तरह बैंक ऋण और अन्य खर्चों का भुगतान करना होगा।
- साथ ही, किसानों को ज्यादातर मौसम की शुरुआत (अक्टूबर-नवंबर) में एकमुश्त राशि की आवश्यकता होती है, क्योंकि उनका अगला फसल चक्र इसी पर निर्भर करता है।

गन्ना:

- तापमान: गर्म और आर्द्र जलवायु के साथ 21-27 डिग्री सेल्सियस के बीच।
- वर्षा: लगभग 75-100 सेमी।
- मिट्टी का प्रकार: गहरी समृद्ध दोमट मिट्टी।
- शीर्ष गन्ना उत्पादक राज्य: उत्तर प्रदेश > महाराष्ट्र > कर्नाटक > तमिलनाडु > बिहार।
- ब्राजील के बाद, भारत गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है।

Swadeep Kumar